डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 165 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | गुरुवार 28 मार्च 2024 | मूल्य 2 रुपया

विधानसभा में 3.20 करोड़ लोकसभा में 95 लाख..!

12 करोड़ से ज्यादा होंगे खर्च..?

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। विधानसभा चुनाव 2023 में एक प्रत्याशी की खर्च की सीमा 40 लाख थी। मतलब संसदीय क्षेत्र में आठ जगहों पर मिलाकर यह सीमा तीन करोड़ बीस लाख होती है। लेकिन, लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी को महज 95 लाख के खर्च में हर घर पहुंचना होगा। हालांकि यह संभव नहीं है। अनुमान है कि जिले में मतदान के दिन तक प्रमुख राजनीतिक दलो द्वारा बारह करोड़ रुपए से ज्यादा पैसा बाजार में आएगा। ये वो पैसा वो है जो राजनीतिक दल विजय श्री हासिल करने के लिए खुलकर खर्च करेंगे। यूं तो चुनाव आयोग ने प्रति उम्मीदवार 95 लाख रुपए की खर्च सीमा तय कर रखी है। लेकिन, प्रत्याशियों से लेकर पार्टियां चुनाव में बेहिसाब धन बल का उपयोग करती है। कुछ ऐसे भी नेता हैं जो टिकट घोषित होने से पहले ही शक्ति प्रदर्शन के नाम पर मोटी रकम खर्च कर चुके हैं। अब चुनावी सभा, प्रचार-प्रसार और मतदाताओं को लुभाने के लिए पैसा खर्च करने से चुनावी प्रसार सामग्री के बाजार में बूम आएगा।

बाजार में ये हैं इलेक्शन इफेक्ट...

मौसमी रोजगार मिलेगा: चुनावी खर्चे से मौसमी तौर पर रोजगार का सृजन भी हुआ है। जैसे हलवाई, होटल, रेस्टोरेंट और ढाबे वालों को रोजाना कार्यकर्ताओं के लिए भोजन का ऑर्डर मिल रहा है। मजदूरों को भी अतिरिक्त काम मिल गया है।

ट्रांसपोर्टर्स कारोबार में उछाल: पार्टियों के लिए वाहन की व्यवस्था कर रहे हैं। बड़ी सभाओं में कार्यकर्ताओं को लाने ले जाने के लिए भी वाहनों की आवश्यकता होगी।

आयोग तय करता है अपने हिसाब से खर्चे की सूची...

चुनाव आयोग द्वारा हर बार उम्मीदवारों द्वारा खर्चो की लिस्ट अपने हिसाब से तैयार की जाती है। इस लिस्ट में चुनाव प्रचार के दौरान चाय, कॉफी, समोसा, रसगुल्ला, आइस्क्रीम समेत प्रत्येक सामान के रेट तय किए जाते हैं। ये खर्चा उम्मीदवार के खाते में जोड़ा जाता है। चुनाव आयोग प्रचार सामग्री और सभा में काम आने वाले सामान की भी कीमत निर्धारित करता है। आयोग अपनी रेट लिस्ट के अनुसार ही उम्मीदवार के खर्चे का आंकलन करेगा।

ऐसे समझो खर्च का गणित...

संसदीय क्षेत्र में आठ विधानसभा है- मंदसौर, गरोठ, सुवासरा, मल्हारगढ़, मनासा, जावद, नीमच, जावरा। कांग्रेस भाजपा की बात करें तो उम्मीद्वार की संख्या है दो। चुनाव आयोग के मापदंड के अनुरूप ये प्रत्याशी कुल 1 करोड़ 90 लाख रुपए खर्च कर सकेंगे। वहीं अन्य दल और निर्दलीय उम्मीदवारों का कुल खर्च करीब एक करोड़ तक जाएगा। इससे चुनावी खर्च का आंकलन किया जा सकता है।

चुनाव में इन खर्चो का नहीं होगा बहीखाता...

- मंदसौर जिले में नेता बड़े पैमाने पर शराब बांटते हैं। इसका कोई हिसाब किताब नहीं रहता।
- गांवों में मतदाताओं में प्रभुत्व रखने वालों को सेट करने के लिए कुछ न कुछ किया जाता है।
- खाने-पीने मतलब चिकन, मटन पर भी बड़ी रकम खर्च होती है। गांवों में तो चुनाव तक रात-रात भर पार्टियां चलती है।

ये भी है भारी भरकम खर्च...

- चुनाव वाले दिन प्रत्येक बूथ पर बैठने वाले कार्यकर्ता को ही औसत 5 हजार रुपए खर्च देना होता है। - प्रत्येक बूथ पर 5 हजार रुपए खर्च के हिसाब से आंकडा करोड़ो में जाता है।

होर्डिंग और बैनर की डिमांड: यूं तो बड़े राजनीतिक दलों की प्रचार सामग्री पार्टी से ही उपलब्ध कराई जा रही है, इसके बावजूद जिले में बैनर-पोस्टर व होर्डिंग बनाने वालों को स्थानीय स्तर पर राजनीतिक दल काम दे रहे हैं। निर्दलीय प्रत्याशियों को इनके पास ही अपनी प्रचार सामग्री प्रिंट करवानी होगी।

टेंट और लाइट कारोबार: टेंट, लाइट और साउंड वालों का भी काम बढ गया है। चूंकि अभी शादी ब्याह जैसे शुभ कार्य बंद है, ऐसे में टेंट, लाइट और साउंड वाले भी खाली ही बैठे थे। उन्हें अच्छा काम मिल गया है।

आइटी प्रोफेशनल की पूछ परख: अभी आईटी प्रोफेशनल को भी काम मिल रहा है। क्योंकि, प्रचार प्रसार का काम काफी हाईटेक हो गया है।

प्रदेश के स्टार प्रचारक बने देवड़ा

नरेंद्र मोदी के साथ 40 प्रचारकों की लिस्ट में शामिल

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री और मंदसौर जिले के मल्हारगढ़ से विधायक श्री जगदीश देवड़ा को प्रदेश की राजनीति में एक बड़ा चेहरा माना जाता है। हालांकि, अभी हाल ही में लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा ने स्टार प्रचारकों की लिस्ट जारी की है। जिसमें श्री देवड़ा का नाम भी शामिल है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश में भी अब भाजपा की तरफ से बड़े नेताओं में श्री देवड़ा का नाम शामिल हो चुका है।

मध्यप्रदेश के लिए अपने स्टार प्रचारकों की लिस्ट जारी कर दी है। 40 नाम वाली इस सूची में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और 7 केंद्रीय मंत्रियों के नाम शामिल हैं। इसके अलावा बीजेपी शासित 6 राज्यों के मुख्यमंत्री भी एमपी में पार्टी प्रत्याशियों के लिए प्रचार करते नजर आएंगे। जिले के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्टार प्रचारकों में उपमुख्यमंत्री और मल्हारगढ़ विधायक जगदीश देवड़ा भी शामिल है। मध्यप्रदेश से सीएम डॉ. मोहन यादव, पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष वीडी शर्मा जैसे बड़े नाम भी स्टार प्रचारकों की लिस्ट में शामिल हैं। वहीं प्रदेश सरकार के कई मंत्री और संगठन से जुड़े पदाधिकारियों को भी प्रचार का जिम्मा सौंपा गया है।

सीएम डॉ. मोहन यादव, डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा, डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल, मंत्री प्रहलाद पटेल, मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, मंत्री राकेश सिंह, मंत्री नारायण कुशवाहा, मंत्री तुलसी सिलावट, निर्मला भूरिया और एदल सिंह कंसाना को भी स्टार प्रचारक बनाया गया है।

प्रधानमंत्री समेत 8 केंद्रीय मंत्रियों को प्रचार का जिम्मा...

बीजेपी के स्टार प्रचारकों की लिस्ट में सबसे पहला नाम प्रधानमंत्री मोदी का है। इसके अलावा 7 केंद्रीय मंत्रियों को भी मध्यप्रदेश में पार्टी के प्रचार का जिम्मा सौंपा गया है। इनमें राजनाथ सिंह, अमित शाह, नितिन गडकरी, ज्योतिरादित्य सिंधिया, वीरेंद्र कुमार खटीक, फग्गन सिंह कुलस्ते और स्मृति ईरानी शामिल हैं।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव समेत बीजेपी शासित 6 राज्यों के मुख्यमंत्री भी एमपी में पार्टी प्रत्याशियों के लिए प्रचार करेंगे। लिस्ट में यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, गुजरात के सीएम भूपेंद्र पटेल, छत्तीसगढ के सीएम विष्णुदेव साय, राजस्थान के सीएम भजनलाल शर्मा और असम के सीएम हिमंत बिश्वा सरमा के नाम शामिल हैं।

इसी तरह पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव, नरोत्तम मिश्रा और गौरीशंकर बिसेन भी एमपी में बीजेपी प्रत्याशियों के लिए प्रचार करेंगे। संगठन से प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष वीडी शर्मा, राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिव प्रकाश और प्रदेश संगठन मंत्री हितानंद शर्मा के भी नाम हैं। एमपी के सीनियर लीडर सत्यनारायण जटिया का नाम भी लिस्ट में है।

पारा पहुंचा 38 डिग्री तक, दो दिन बाद फिर बदलेगा मौसम

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। गरमी के तेवर दिन प्रतिदिन तीखे होते जा रहे है। बुधवार दोपहर पारा 38 डिग्री के आसपास पहुंच गया। अंचल में तापमान सामान्य से अधिक बना हुआ है। घरो व दुकानो, संस्थानो में कूलर, ऐसी की जरूरत पड़ने लगी है। अगले दो दिन ऐसी ही स्थिति रहने वाली है। इसके बाद पश्चिमी विक्षोभ का असर हो सकता है।

बुधवार को अधिकतम तापमान 38 डिग्री और न्यूनतम तापमान 22 डिग्री के आसपास बना रहा। अगले दो दिनों में दिन के तापमान 1-2 डिग्री तक और उछाल आ सकता है। मौसम जानकारो के अनुसार 29 मार्च से एक पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो रहा है। इसका असर 30 मार्च को देखने को मिलेगा। इस दौरान प्रदेश के 30 जिलों में बादल छाए रह सकते हैं। वहीं कहीं-कहीं हल्की बूंदाबांदी का भी अनुमान है।

पं. प्रदीप मिश्रा की कथा को लेकर असमंजस

तैयारियां जारी, सोशल मीडिया पर किया जा रहा आव्हान, विधायक ने सीएम को लिखा पत्र, कलेक्टर-एसपी ने किया कथा स्थल का मुआयना

मनासा, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। प्रख्यात कथा वाचक पंडित प्रदीप मिश्रा के मुखारबिंद से होने वाली श्री शिव महापुराण कथा का आयोजन वैसे तो प्रशासन ने निरस्त कर दिया है। लेकिन, यहां तैयारियों का दौर जारी है। सोशल मीडिया पर निरस्त होने के आदेश को अफवाह बताया जा रहा है तो प्रशासनिक अधिकारी व्यवस्थाओं का अभाव बताकर लिखीत में कथा निरस्त होने के आदेश जारी कर चुके हैं। इधर सोशल मीडिया पर बकायदा तैयारियों के फोटो भी वायरल हो रहे हैं। वहीं विधायक अनिरुद्ध माधव मारु ने भी सीएम मोहन यादव को पत्र लिखकर कथा करवाने की अनुमति दिए जाने की मांग की है। इधर मंगलवार को कलेक्टर ने भी आयोजन समिति और समाजसेवियों की बैठक ली। जिसमें कलेक्टर से सभी व्यवस्थाओं को जुटाने का आश्वासन देते हुए कथा निरस्त नहीं करने का निवेदन किया। दोपहर में कलेक्टर एवं एसपी ने कथा स्थल का मुआयना भी किया। बता दे कि 01 से 07 अप्रैल तक मनासा में कथा का आयोजन होना तय हुआ है।

मनासा नगर के अक्षत नगर कॉलोनी में 1 से 7 अप्रैल तक आयोजित होने

वाली श्री शिव महापुराण कथा को एसडीएम ने निरस्त कर दिया है। इस संबंध में आदेश भी जारी किया है। जिसमें निरस्ती का कारण आदर्श आचार संहिता के चलते पुलिस बल की कमी ओर आयोजकों द्वारा आयोजन के लिए निर्धारित व्यवस्थाओं को अपर्याप्त बताया है। प्रशासन की माने तो इस संबंध में आयोजकों और पंडित प्रदीप मिश्रा के कार्यालय से जुड़े श्री शुक्ला को लिखित आदेश से अवगत करा दिया गया है। आगे की तारीख के लिए कहा गया है। प्रशासनिक अधिकारियों के अनुसार आदर्श आचार संहिता के चलते पुलिस बल की कमी है। अतिरिक्त बटालियन भी अन्य राज्यों में चुनाव के लिए चली गई है। आयोजन स्थल पर भी व्यवस्थाएं संतोषजनक नहीं पाई गई है। संसाधनों की कमी भी देखी गई है। इस संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों और हमने भी निरीक्षण करने के बाद आयोजकों से कहा था। लेकिन, फिर भी व्यवस्थाएं अपर्याप्त ही रहीं। इन तमाम बातों के चलते श्री शिव महापुराण कथा के आयोजन निरस्त किया गया है।

विधायक मारु ने लिखा सीएम को पत्र...

विधायक अनिरुद्ध माधव मारु ने सीएम मोहन यादव को पत्र लिखा है। जिसमें कहा गया है कि वर्तमान में लोकसभा चुनाव को लेकर आचार संहिता लगी हुई है। इसे दृष्टिगत रखते हुए जिला कलेक्टर ने पुलिस बल कम होने और आयोजन समिति द्वारा निर्धारित अन्य व्यवस्थाएं नहीं होने से कथा आयोजन की अनुमति निरस्त कर दी है। इससे मनासा नगर सहित नीमच जिले में आमजन में आकोश है। चूंकि समूचा आयोजन धर्मआस्था से जुड़ा है और मनासा नगर में विश्व विख्यात कथा वाचक पंडित प्रदीप जी मिश्रा की कथा होना गर्व की बात होगी। इस हेतु उक्त आयोजन में आपका हस्तक्षेप होना आवश्यक हो गया है। आप कथा के लिए पर्याप्त पुलिस बल की व्यवस्था कर आयोजन की अनुमति प्रदान करे। अन्य व्यवस्था मैं और समस्त नगरवासी एवं देवडा परिवार मिलकर जुटा लेंगे। संपूर्ण पुलिस बल की व्यवस्था के साथ शांतिपूर्ण सदभावना के साथ आदर्श आचारसंहिता का पालन करते हुए कथा आयोजन होगा। इसका मैं और समस्त नगरवासी आपको पूर्ण विश्वास दिलाते है।

खेर में था जहरीला पानी, 93 भेड़ों ने तोड़ा दम

नाहरगढ़, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। क्षेत्र के ग्राम कोटड़ा बहादुर के जंगलों मे करीब 93 भेड़ो की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि एक किसान के खेत में बने खेर 'पानी के टेंक' से सभी भेडों ने पानी पिया था। उसके थोड़ी देर बाद सभी भेड़े गश खाकर गिर गई और एक के बाद एक कर सभी भेड़ो की मौत हो गई। जिससे यह माना जा रहा है कि पानी कि खेर में जहरीला पानी हो सकता है। इसका एक वीडियो भी सामने आया है। वीडियो सामने आने के बाद नाहरगढ़ थाना पुलिस टीम मौके पर पहुंची और उनके द्वारा मृत भेड़ो को निकटकेपशुचिकित्सालय भेजा गया। जहां मृत भेड़ो का पोस्टमार्टम करवाया गया। इसकेबाद भेड़ो को दफनाया गया। मौकेपर मौजूद प्रशासनिक टीम ने पानी का सैंपल लिया है। पुलिस ने बताया की पूरे मामले की गहनता से जांच की जा रही है।

पूर्व विधायक की भानेज की कार से लाखों के जेवरात चोरी

संजय दुआ

शामगढ, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। पूर्व विधायक की भानेज की वेगन आर कार से अज्ञात बदमाश लाखो रुपए की ज्वेलरी से भरा पर्स चुरा कर भाग गया। जानकारी मिलने पर सीसीटीवी कैमरे खंगाले गए। लेकिन बदमाश की पहचान नहीं हो सकी। मामले में शामगढ थाना पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया है। किंतु, जानकारी देने कतराती रही। मिली जानकारी के अनुसार पूर्व विधायक राधेश्याम पाटीदार के पिपलिया मंडी के समीप रूपी के रहने वाले और इंदौर में सर्विस कर रहे भांजा जमाई का स्थानांतरण महाराष्ट्र के पूना हो गया। वे अपने ससुराल चचावदा पठारी होकर अपने गांव रूपी जाने वाले थे। इसी बीच शामगढ रेलवे स्टेशन रोड पर अपनी कार खडी कर किसी काम से निकले थे। उनकी कार के पीछे के दोनो शीशे आधे खुले रह गए। बस यहीं बदमाश ने मौका देख कर पीछे की सीट पर रखे पर्स पर हाथ साफ कर दिया। जब पाटीदार दंपति वापस अपनी कार पर पहुंचे तो उन्हें पर्स नहीं दिखा। उन्होंने सब तरफ तलाश किया। सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए। लेकिन, आरोपी का चेहरा क्लियर नहीं हो पाया। मामले में पुलिस ने फरियादी की रिपोर्ट पर आईपीसी की धारा 379 के तहत अज्ञात बदमाश के विरुद्ध प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की है। मामले में शामगढ थाना टीआई और एसआई को काल किया गया। लेकिन आचार संहिता में भी दोनो के फोन नो रिप्लाई होते रहे।

अफीम तौल के लिए– किसानो द्वारा इन दिनो डोडो से अफीम निकालकर कुंडो में संभालकर रखी हुई है। अपनी अफीम के लिए रात-रात भर जागकर चौकीदारी की जा रही है। जल्द ही नारकोटिक्स विभाग द्वारा किसानो की अफीम खरीदी जाएगी। इसके लिए अफीम तौल केन्द्र पर समुचित तैयारियां की जा रही है।

सशस्त्र सुरक्षा बल के जवानों ने चलाया पशुपतिनाथ मंदिर परिसर में सफाई अभियान

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। देश के आम चुनाव का ऐलान हो चुका है। आदर्श आचार संहिता का पालन करवाने के लिए जिला निर्वचन कार्यालय ने पूरी तैयारी कर ली है। अलग-अलग थाना क्षेत्रों में फ्लैग मार्च निकाला जा रहा है। शांतिपूर्वक चुनाव सम्पन्न करवाने के लिए जिले को सीमा सुरक्षा बल 'एसएसबी' की कंपनियां मिली है। जिले में आचार संहिता का पालन करवाने के साथ-साथ एसएसबी की कंपनियां सामाजिक कार्यों में अपनी सहभागिता निभा रही है।

बुधवार को शस्त्र सुरक्षा बल के 100 जवान भगवान पशुपतिनाथ मंदिर पहुंचे। जहां उन्होंने महादेव की पूजा अर्चना की। इसके बाद सभी जवानों ने मिलाकर स्वच्छता अभियान चलाते हुए मंदिर परिसर में साफ सफाई कर श्रमदान किया। बताया जा रहा है की एसएसबी की यह 46वीं बटालियन है। यह नेपाल भूटान सीमा पर देश की रक्षा में तैनात रहती है।

दिलीप गुर्जर के लिए नाहटा और नटराजन की टीम भाजपा का विजय अभियान रोकेगी..!

मंदसौर/उज्जैन, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर-नीमच- जावरा संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी नागदा जंक्शन के दिलीप गुर्जर को भाजपा के सुधीर गुप्ता के सामने चुनाव मैदान में उतारा गया है। एनडीए के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तूफानी हवा के दौर में गुप्ता तीसरी बार लोकसभा चुनाव के प्रत्याशी बने हैं। जबकि, दिलीप गुर्जर पहली बार वह भी अपने गृह जिले के पड़ोस से। चार बार के विधायक दिलीप गुर्जर एक बार निर्दलीय प्रत्याशी बन भी विधायक चुनाव जीत चुके हैं। संभाग की राजनीति में कांग्रेस का स्थापित आमजन के बीच प्रचलित नाम है। दिलीप गुर्जर की घोषणा के पहले स्थानीय कांग्रेसियों में जिला अध्यक्ष विपिन जैन और नीमच के नंदू पटेल का नाम चल रहा था।

नीमच-मंदसौर संसदीय क्षेत्र के राजनीतिक दृश्य में यह उल्लेख आवश्यक है कि यहां के कुल मतदाताओं में 50 से 54 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग के मत होंगे। इसमें से गुर्जर, गायरी, धनगर समाज के ढाई लाख के लगभग हैं। कांग्रेस समर्थक नेताओं की माने तो दिलीप गुर्जर को इस संसदीय क्षेत्र से प्रत्याशी इसीलिए बनाया गया है कि वह पिछड़ा वर्ग सहित गुर्जर, गायरी, धनगर समूह के मतों को कांग्रेस के पक्ष में भूना सके। इसके अलावा प्रदेश कांग्रेस संगठन ने दिलीप गुर्जर को जीताने के लिए दो अनुभवी और लोकसभा क्षेत्र को जानने समझने वाले, आमजन में बेहतरीन छवि के साथ स्थापित नेता नरेंद्र नाहटा और मीनाक्षी नटराजन को संसदीय क्षेत्र का पर्यवेक्षक बनाया है। इन दोनों पर्यवेक्षकों के नाम पर कांग्रेस के अलावा आम राजनीतिकों में सकारात्मक प्रतिक्रिया का वातावरण बना है।

चन्द्रमोहन भगत

इसके अलावा दिलीप गुर्जर खुद चार बार के विधायक, जिसमें एक बार निर्दलीय लड़कर चुनाव जीते है। यह नतीजे जाहिर करते है कि उन्हें विपरीत परिस्थितियों में भी चुनाव लड़ना और मैनेज करना अच्छे से आता है। इसीलिए माना जा रहा है कि नीमच मंदसौर क्षेत्र में भी गुर्जर अपने विवेक और अनुभवी पर्यवेक्षकों के साथ मिलकर अपनी चुनावी कार्यकर्ताओं की मजबूत टीम बनाएंगे और भाजपा प्रत्याशी के साथ नरेंद्र मोदी की हवा का भी डटकर मुकाबला करेंगे। संसदीय क्षेत्र की वर्तमान राजनीति में एक दृश्य यह भी उभर कर वातावरण में छाया हुआ है कि भाजपा प्रत्याशी सुधीर गुप्ता से उनके अपने समर्थक भाजपाई जो निजी या राजनीतिक कारणों से नाराज हैं, विरोध में काम कर सकते हैं या तटस्थ रहेंगे! अगर अत्यधिक आंतरिक विरोध का वातावरण बना तो अदृश्य गतिविधियां चला कर कांग्रेस प्रत्याशी को लाभ भी पहुंचा सकते हैं! अगर ऐसा हो गया तो लोकसभा चुनाव में भी मंदसौर विधानसभा जैसा नतीजा आने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता है।

विचार-मंथन

नशे के कारोबार पर नकेल कसना बना चुनौती

पंजाब में नशे के कारोबार पर नकेल कसना लंबे समय से चुनौती बना हुआ है। पिछले विधानसभा चुनाव में यह सबसे बड़ा मुद्दा था। आम आदमी पार्टी ने वादा किया था कि अगर वह सरकार में आएगी, तो इस धंधे पर पूरी तरह रोक लगा देगी। मगर अभी तक इस दिशा में कोई कामयाबी नजर नहीं आ रही। ताजा मामला यह है कि मुख्यमंत्री के जिले संगरूर में जहरीली शराब पीने से इक्कीस लोगों की मौत हो चुकी है। कई लोगों का इलाज चल रहा है। इसे लेकर यह प्रश्न लोगों की जेहन में अटक गया है कि जब मुख्यमंत्री के जिले में जहरीली शराब के धंधे और मादक पदार्थों की पहुंच पर रोक नहीं लग पाई है, तो बाकी जगहों पर क्या स्थिति होगी। पंजाब में काफी समय से नशे की वजह से हो रही नौजवानों की मौतों को लेकर चिंता जताई जाती रही है। सीमावर्ती राज्य होने के कारण वहां पाकिस्तान के रास्ते मादक पदार्थों की पहुंच पर रोक लगाना भी कठिन बना हुआ है। ऐसे में अगर जहरीली शराब से मौतों का नया मामला आया है, तो उसे लेकर स्वाभाविक ही नए सवाल उठने शुरू हो गए हैं। हालांकि प्रशासन ने छह लोगों को गिरफ्तार कर इस मामले में कार्रवाई शुरू कर दी है। नकली शराब का कारोबार कमोबेश हर राज्य की समस्या है। चोरी-छिपे शराब बनाने और बेचने वाले हर कहीं मौजूद हैं, मगर जो सरकारें सचमुच इस समस्या से पार पाने को लेकर संजीदा होती हैं, वे ऐसे कारोबारियों पर नकेल कसने में कामयाब ही देखी जाती हैं। पंजाब की तुलना दूसरे राज्यों से फिलहाल इसलिए नहीं की जा सकती, क्योंकि वहां नशे पर काबू पाना सरकार की प्राथमिकता है। वहां नशे के कारोबार के फलने-फूलने की वजहें भी अब काफी हद तक साफ हैं। उसमें अनेक रसूखदार लोगों और बड़े अधिकारियों की गिरफ्तारियां भी हो चुकी हैं। इस तरह माना जा सकता है कि वहां का प्रशासन इस समस्या को लेकर सतर्क है। फिर यह समझना मुश्किल है कि संगरूर में किस तरह नकली शराब बनाई जा रही थी और प्रशासन को इसकी भनक तब मिल सकी, जब जहरीली शराब पीकर लोग मरने लगे। इस तरह के धंधे स्थानीय लोगों की जानकारी से बाहर नहीं होते। फिर स्थानीय लोगों से पुलिस का तालमेल ठीक हो, तो उसे भी इस तरह के धंधे की जानकारी मिल ही जाती है। मगर नकली शराब के धंधे में अक्सर देखा जाता है कि इसे चलाने वालों की पुलिस से सांठगांठ होती है। संगरूर में भी ऐसी किसी गठजोड़ से इनकार नहीं किया जा सकता। नकली शराब पीकर मरने वाले ज्यादातर गरीब लोग होते हैं, जो कम पैसे में नशे के लिए ऐसी शराब खरीदते हैं। इनमें से ज्यादातर अपने परिवार के लिए रोटी कमाने वाले होते हैं। उनके मरने से पूरे परिवार के सामने संकट खड़ा हो जाता है। उनका संकट कुछ मुआवजा देकर दूर नहीं किया जा सकता। इसलिए हमेशा से नकली शराब बनाने वालों के खिलाफ कठोर कदम उठाने की सिफारिश की जाती रही है। मगर सरकारों और प्रशासन की लापरवाही का नतीजा यह निकलता है कि हर घटना के बाद कुछ लोगों को गिरफ्तार तो कर लिया जाता है, पर उन्हें ऐसी कोई सजा नहीं मिल पाती, जो दूसरों के लिए नजीर बने। इसलिए भी जहरीली शराब के कारोबारियों पर शिकंजा कसना मुश्किल बना हुआ है। पंजाब सरकार इस सच्चाई से अनजान नहीं है।

भारत के कितने हित में होगा पाकिस्तान के साथ व्यापार?

संजय तिवारी

पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने लंदन में कहा है कि पाकिस्तान के बिजनेसमैन चाहते हैं कि भारत के साथ बंद हो चुका व्यापार दोबारा से शुरु किया जाए। इशाक डार के मुताबिक इसे लेकर पाकिस्तान सीरियस है। पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने लंदन जाकर यह बयान ऐसे समय में दिया है जबकि भारत में आम चुनाव शुरू होने वाले हैं। इसलिए चर्चा के लिए तो इस बयान का महत्व हो सकता है लेकिन वास्तविक महत्व तभी होगा जब भारत में नयी सरकार बन जाने के बाद इस पर बातचीत होगी। लेकिन बुनियादी सवाल यह है कि क्या भारत को फिर से पाकिस्तान से व्यापारिक रिश्ता बहाल करना चाहिए? यह एक ऐसा सवाल है जिसके जवाब में हमें यह समझना होगा कि भारत और पाकिस्तान के बीच व्यापारिक रिश्ता बंद क्यों हुआ था? भारत के लिए पाकिस्तान किसी अन्य देश जैसा ही नहीं है। पाकिस्तान का जन्म भारत को मजहबी हिंसा में झोंककर और लाखों लोगों की कुर्बानी तथा बर्बादी पर हुआ है। उसके साथ न भारत का रिश्ता कभी सहज रहा है और न रह सकता है। इसका कारण सिर्फ यह भर नहीं है कि पाकिस्तान पहले दिन से कश्मीर पर दावा किये बैठा है और उसे आतंकवाद के जरिए हासिल करना चाहता है। बल्कि जब जब भारत पाकिस्तान की ओर आगे बढ़ेगा, उसके उन घावों से खून रिसने लगेगा जो

पाकिस्तान ने अपने जन्म से अब तक भारत को दिए हैं। सर सैय्यद अहमद हों या फिर अल्लामा इकबाल या फिर मोहम्मद अली जिन्ना। किसी न किसी तरह से समय समय इन्होंने यही डर दिखाया था कि अंग्रेजों के जाने के बाद हिन्दू अक्सरियत में मुसलमान दब जाएगा। पाकिस्तान भले ही जिन्ना ने मांगा हो लेकिन अविभाजित पंजाब, सिन्ध से लेकर अविभाजित बंगाल तक मुस्लिमों ने अगर अलग पाकिस्तान का समर्थन किया तो उसके मूल में एक बड़ा कारण हिन्दू बनियों का व्यापार में वर्चस्व होना भी था। आज भी पाकिस्तान में हिन्दुओं की पहचान हिन्दू बनिया के रूप में की जाती है। उनके लिए व्यंग में एक कहावत वहां बहुत प्रचलित है कि हिन्दू वह बनिया है जिसके मुंह में राम और बगल में छूरी रहती है। इसलिए जब 1947 में भारत को काटकर पाकिस्तान बन रहा था तब वहां के मुस्लिम व्यापारियों ने इसे अपने लिए एक अवसर के रूप में देखा था। फिर वो सिन्ध के कारोबारी रहें हों या पंजाब के कारोबारी। उन्हें लगता था कि जो व्यापारिक संभावना हिन्दू बनिया छोड़कर जा रहा है वो उसे भुना लेंगे और आर्थिक रूप से समृद्ध हो जाएंगे। शुरुआत के दो दशक जब भारत और पाकिस्तान दोनों ही सोशलिस्ट नीति पर चल रहे थे तब पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति भारत से अच्छी थी। लेकिन बांग्लादेश के अलग होते ही पाकिस्तान ने जो मजहबी रफ्तार पकड़ी तो उसकी अर्थव्यवस्था दिनों दिन बिगड़ती चली गयी। वैसे तो आर्थिक रूप से पाकिस्तान के बर्बाद होने के बहुत से कारण हैं लेकिन सबसे प्रमुख कारण भारत और हिन्दुओं से नफरत ही बनी रही। पाकिस्तान कभी अमेरिका की गोद में बैठ तो कभी चीन के आगे बिछ गया। लेकिन जब जब हिन्दू बनिया से तिजारत (व्यापार) बढ़ाने की बात आई तब तब वहां के मजहबी मुल्लाओं ने बांग दिया कि क्या पाकिस्तान हिन्दुओं से तिजारत करने और अच्छा रिश्ता रखने के लिए बना था? मुल्लाओं का तर्क अकाट्य है। यही कारण है कि जैसे जैसे पाकिस्तान सच्चे इस्लाम के रास्ते पर आगे बढ़ता गया वहां के लोगों के मन में भारत को लेकर नफरत बढ़ती गयी। जिया उल हक के जमाने से आज तक तमाम उतार चढ़ाव के बावजूद वहां की आम अवाम ही इस बात के हक में नहीं रहती है कि भारत के साथ तिजारती रिश्ते बढ़ाये जाएं। उनकी इस नफरत के बावजूद अगर पाकिस्तान ने भारत के साथ कुछ व्यापारिक रिश्ते रखे हैं तो उसका कारण अंतरराष्ट्रीय बाध्यता और उनकी अपनी आर्थिक मजबूरियां थीं। लेकिन इस दौरान भी पाकिस्तान ने भारत में आतंकवाद फैलाने में कभी कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। कश्मीर और पंजाब में ही नहीं मुंबई पर आतंकी हमला जैसा जघन्य कुकर्म पाकिस्तान के हुक्मरानों ने प्लान किया। एक ओर पाकिस्तान भारत के साथ व्यापार करता रहा दूसरी ओर दो दशक तक देशभर में बम विस्फोट के जरिए हजारों लोगों की जान लेता रहा। इंदिरा गांधी से लेकर मनमोहन सिंह तक पाकिस्तान भारत के हर प्रधानमंत्री के साथ विश्वासघात करता रहा। वहां की फौज, वहां की आईएसआई सिर्फ भारत को लहूलुहान करने को अपनी जीत समझते रहे। मानों पाकिस्तान का होना सिर्फ भारत को परेशान करने और उसे बर्बाद करने के लिए ही है। एक दशक पहले तक टीवी पर बैठकर आईएसआई के चीफ रहे हामिद गुल जैसे हुक्मरान भारत के मुंबई या बंगलौर जैसे शहरों को बर्बाद करने की धमकी देते रहे। परमाणु बम की धमकी तो मानों उनके लिए कंचे गोली खेलने जैसा हो। इन्हीं परिस्थितियों में 2014 में नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने। अपने शपथ ग्रहण समारोह में उन्होंने आसियान देशों के प्रमुखों को बुलाया था जिसमें पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ भी शामिल थे। लेकिन जल्द ही मोदी को समझ में आ गया कि अपने खिलाफ पाकिस्तानियों की नफरत को वो किसी व्यापारिक रिश्ते से नहीं ढांक सकते। दिल्ली आकर नवाज शरीफ भी इस्लामाबाद में घिर गये और उनके बाद आये इमरान खान ने तो मोदी को छोटा आदमी बताकर अपनी हेकड़ी दिखा ही दी थी। इतना सब होने के बावजूद भारत ने 1996 में पाकिस्तान को दिया मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का दर्जा खत्म नहीं किया। हालांकि एमएफएन में जितनी वस्तुएं शामिल की गयी थीं पाकिस्तान उसकी चौथाई का भी व्यापार बड़ी मुश्किल से कर रहा था। लेकिन 2019 में पुलवामा में सैनिकों के काफिले पर आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान को दिया एमएफएन का दर्जा वापस ले लिया। मोदी तो पहले ही पाकिस्तान से विमुख हो गये थे।

भाजपा के लिए शुभंकर हैं मोदी...!

कल्याणी शंकर

यह चुनाव घोड़े की दौड़ की तरह है जिसमें भाजपा का दबदबा है और विपक्षी दल उसके पीछे है। प्रधानमंत्री मोदी हैट्रिक लगाकर लगातार तीसरी बार जीत हासिल करना चाहते हैं। विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन में 26 दल शामिल हैं जिन्होंने भाजपा को चुनौती देने के लिए चुनाव पूर्व गठबंधन बनाया है। 'इंडिया' गठबंधन का लक्ष्य आगामी चुनावों में भाजपा के खिलाफ एक विपक्षी उम्मीदवार खड़ा करना है।'इंडिया' ब्लॉक का नेतृत्व करने वाली कांग्रेस पार्टी को 2014 और 2019 में लगातार 2 हार का सामना करना पड़ा है और उसकी छवि को काफी नुकसान हुआ है। पार्टी की कमजोरियों में से एक पिछली सफलताओं पर अत्यधिक निर्भरता और सहस्राब्दियों सहित युवा पीढ़ियों के साथ संबंधों की आवश्यकता है। कांग्रेस 138 साल पुरानी धर्मनिरपेक्ष पार्टी है जो एस.सी., एस.टी., ओ.बी.सी. और मुसलमानों जैसे हाशिए पर रहने वाले समूहों का प्रतिनिधित्व करती थी। अतीत में क्षेत्रीय क्षत्रपों के उदय के साथ यह कमजोर हो गई है। पार्टी अब अपनी 5 गारंटी युवा न्याय, भागीदारी न्याय, नारी न्याय, किसान न्याय और श्रमिक न्याय के साथ भारत के गरीबों, पीड़ितों, दलितों, किसानों, युवाओं और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। विपक्ष, मुख्य रूप से कांग्रेस का लक्ष्य भाजपा विरोधी वोटों को एकजुट करके और प्रोत्साहन देकर मोदी को चुनौती देना है। पिछले साल के विधानसभा चुनावों में यह रणनीति हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और तेलंगाना में काम आई, जहां कांग्रेस ने जीत हासिल की। कांग्रेस को उम्मीद है कि उसे भाजपा की सत्ता विरोधी लहर, रियायतों और मुफ्त उपहारों से फायदा होगा। वे राहुल गांधी की हालिया 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' पर भी प्रकाश डालते हैं, जिसका उद्देश्य लोगों से जुड़ना था। सफल होने के लिए, कांग्रेस को युवा मतदाताओं से जुड़ने के लिए महंगाई, बेरोजगारी और सामाजिक कलह जैसे रोजी-रोटी के मुद्दे उठाने होंगे, जो कई चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। उन्हें संबोधित करने के लिए एक वैकल्पिक रणनीति दिखानी होगी। राज्य-स्तरीय पार्टियों के कुछ शक्तिशाली मुख्यमंत्रियों का अपने राज्यों पर दबदबा है, जिससे इन क्षेत्रों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए कड़ी चुनौती बनती है।

2019 के लोकसभा चुनावों के दौरान, भाजपा और उसके सहयोगियों को केवल 45 प्रतिशत वोट मिले, जबकि शेष 55 प्रतिशत वोट 'इंडिया' ब्लॉक के लिए थे। हालांकि वर्तमान में कोई भी राष्ट्रीय नेता मोदी की लोकप्रियता की बराबरी नहीं कर सकता है, लेकिन कुछ प्रभावशाली क्षेत्रीय नेता अपने-अपने क्षेत्रों में मतदाताओं को प्रभावित कर सकते हैं। यह पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के लिए विशेष रूप से सच है। 'इंडिया' गठबंधन के लिए सबसे बड़ी चुनौती मोदी के खिलाफ एक नेता को पेश करना है। दुर्भाग्य से, गठबंधन सहयोगियों के बीच अहं का टकराव है, जिससे किसी पर सहमति बनाना मुश्किल हो जाता है। दूसरे, भाजपा अपार वित्तीय और राजनीतिक शक्ति के साथ एक मजबूत संगठन का दावा करती है। संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को छोड़कर, विपक्ष के पास कोई ठोस और सम्मोहक कहानी नहीं दिखती है। हालांकि, अधिकांश मतदाता भोजन, कपड़े और आश्रय जैसी बुनियादी जरूरतों के बारे में अधिक चिंतित हैं। उदाहरण के लिए, 2004 में सोनिया गांधी का आम आदमी नारा जनता के बीच खूब गूंजा। कम आय वाले लोग आमतौर पर तनख्वाह से तनख्वाह तक जीते हैं और अमूर्त राजनीतिक अवधारणाओं से संबंधित नहीं हो सकते हैं। कांग्रेस पार्टी अभी भी अपने गौरवशाली अतीत से चिपकी हुई है और वर्तमान राजनीतिक माहौल को स्वीकार करने में विफल हो रही है। कांग्रेस स्वचालित रूप से दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में गठबंधन का नेतृत्व करने की उम्मीद करती है, लेकिन बड़े अहंकार वाले अन्य क्षेत्रीय नेता भी उसके साथ प्रतिस्पर्धा करना चाहते हैं। कांग्रेस अपने नेताओं को भाजपा के हाथों खो रही है और इन नेताओं के लगातार कांग्रेस छोड़ने से पार्टी का मनोबल गिर रहा है। विपक्ष को भाजपा के इस प्रचार का ठोस जवाब चाहिए कि वे हिंदू विरोधी पार्टी है।

चुनावी महासमर में महारथियों की छवियों के बीच मुकाबला

भारतीय जनतंत्र की प्राण-शक्ति चुनाव हैं। चुनावों से ही वह जनतांत्रिक तत्व पैदा होता है, जिससे भारतीय जनतंत्र को बल मिलता है। हर चुनाव हमें सिखाता है और हरेक चुनाव अपने आप में 'अनेक आवाजों के समुच्चय' के रूप में हमारे सामने आता है, जिनको हमें अत्यंत सावधानी से सुनना, पढ़ना व समझना होता है। हालांकि, किसी भी चुनाव के मुद्दे, बहस, वादे, वृत्तांत क्या होंगे, यह सब चुनाव प्रचार शुरू होने के पहले ही झलकने लगते हैं। अभी तक जो झलकियां सामने आई हैं, उनके आधार पर कुछ बातें स्पष्ट हैं। पहली बात, यह छवियों का चुनाव है। इसमें राजनीतिक दलों के नेताओं की छवियां आपस में टकराएंगी। पहले चुनावी व्याख्याओं में 'नैरेटिव' शब्द केंद्र में होता था। इस बार 'नैरेटिव' छवि के पूरक बनकर आएंगे। राजनीतिक दलों के वादे, नैरेटिव गढ़ने के प्रयास व मुद्दे 'छवियों' के सहायक बनकर मौजूद रहेंगे। राजनीतिक छवियां वस्तुतः राजनीतिक वृत्तांतों के गुणात्मक रूपांतरण और नेताओं के राजनीतिक प्रदर्शन व उनके द्वारा अर्जित 'विश्वास की पूंजी' के संग्रंथन से बनती हैं। दूसरा, वृत्तांत जब निश्चित होकर 'स्टीरियो टाइप' में बदल जाते हैं, जब वे नीरस हो जाते हैं, तब अपना आकर्षण खो देते हैं। ऐसी स्थिति में जनता वृत्तांतों से ज्यादा छवियों की ओर देखती है। हम देख रहे हैं कि चुनावों के मुद्दे सरकार में शामिल दलों और प्रतिपक्ष, दोनों के लिए लगभग एक से रहे हैं। वादे भी लगभग एक जैसे हैं। ऐसे में, चुनावी वृत्तांत अपनी चमक खोते जा रहे हैं। छवियां वस्तुतः किसी भी नेता द्वारा उसके राजनीतिक कार्यों, अभियानों से उपार्जित विश्वास की पूंजी से रूढ़ होती हैं। इनके निर्माण में मीडिया, चर्चा, सोशल मीडिया की बड़ी भूमिका होती है। इस आम चुनाव में एक ओर, भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विशाल राजनीतिक छवि है, जो पिछले दस वर्षों में जनता से उनके सीधे संवाद, सरकारी योजनाओं के आधार तल के प्रभावी विस्तार, लाभार्थी समूहों का विश्वास, हिंदू गर्व के तीर्थ स्थानों के पुनर्निर्माण और भविष्य के शक्तिवान भारत की आशा इत्यादि के सम्मिलन से बनी है। दूसरी तरफ, कांग्रेस के नेता और इंडिया ब्लॉक के अगुआ राहुल गांधी हैं। उनकी टीम और उनके दल के लोगों ने भी पिछले कुछ वर्षों में उनके छवि-निर्माण पर काम किया है। उन्होंने पिछले दिनों 'भारत जोड़ो यात्रा 'व 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' से अपनी छवि गढ़ने की कोशिश की है। सोशल मीडिया पर उनकी छवि की नकारात्मकता में काफी कमी तो आई है, लेकिन उनकी राजनीतिक छवि के संपूर्ण प्रभाव में विकसित होने का अभी इंतजार है। वस्तुतः छवि-निर्माण की उनकी प्रक्रिया अनेक बार उनके कुछ बयानों से बाधित हो जाती है। चुनावों के समय राजनेताओं की छवियां अनेक बार वृत्तांतों के खोखलेपन से पैदा हुई रिक्तियों को भर देती हैं। आज का दौर यूं भी मशीन उत्पादित छवियों के परमानंद का दौर है। इसमें सोशल मीडिया पर तैरने वाली तस्वीरों की बड़ी भूमिका है। राजनेता अपने विभिन्न राजनीतिक अभियानों, अपनी पदयात्राओं, रोड शो इत्यादि में तस्वीर लेने, सेल्फी लेने-देने और उन्हें वायरल करने को राजनीतिक प्रचार की एक प्रभावी रणनीति के रूप में देखने लगे हैं। नौजवान मतदाताओं पर इसका असर भी पड़ता है। जैसे ही कोई नेता राजनीतिक रैलियों और जन संवादों में एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान के लिए बढ़ता है, उसकी सैकड़ों तस्वीरें लोगों के मन में बस जाती हैं। जाहिर है, लोग अपनी-अपनी पसंद के आधार पर नेताओं की छवियों से जुड़ाव महसूस करने लगते हैं।

आज का राशिफल

मेष

वृषभ

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुंभ

मीन

सुडोकू पहेली — क्रमांक- 5187

	4			1				9
	7			6		1		
1	6	3	9					8
	3					2		
	5		7		2		1	
		6					3	
6					5	8	9	2
		5		2			6	
9				8			4	

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5186

6	9	5	4	7	3	2	1	8
7	3	4	8	2	1	5	6	9
2	8	1	6	9	5	7	3	4
8	1	2	5	3	9	4	7	6
4	6	7	2	1	8	9	5	3
3	5	9	7	6	4	8	2	1
1	7	3	9	4	2	6	8	5
9	2	8	1	5	6	3	4	7
5	4	6	3	8	7	1	9	2

वर्ग पहेली 5187

संकेत: बाएं से दाएं

1. 21 सितंबर 1964 माल्टा ने इस देश से स्वतंत्रता हासिल की (3)
4. ये भारत के उपराष्ट्रपति थे (कार्यकाल 1997-2002)(4)
7. जल से उत्पन्न वस्तु (3)
8. धीवान, धोढ़ी, जोखिम सहन (2)
9. अन्यथा पुस्तिका को अंग्रेजी में यह कहते है (4)
12. यह वह रूप जो विभक्ति लगाने पर यह रूपधारण करता है (2)
14. ... (3)
16. बराबर, तुल्य (2)
17. अभ्यागत, रीवार, प्रतीक व्यक्ति (3)
18. मनुज, इंसान, मनु संतति (3)
19. किया समाप्त, किया जाना (2)
21. यह थाईलैंड का एक पूर्व नाम है (2)
22. पहर-पहर पर घंटा बजाने का शब्द, समय घोष, याम घोष (3)

ऊपर से नीचे

1. पुत्र, बेटा (अंग्रेजी) (2)
2. ... (3)
3. इराक का एक प्रमुख शहर है जहां सुन्नियों के चौथे खलीफा यानी शिया इस्लाम के पहले इमाम अली की मजार होने की वजह से ये इस्लाम तथा शिया इस्लाम का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है (3)
4. ... (3)
5. ... (5)
6. ... (2)
10. ... (4)
11. ... (5)
13. ... (5)
14. कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि (4)
15. ... (3)
20. ... (3)

वर्ग पहेली 5186 का हल

रंगपंचमी के अवसर पर निकलने वाली महागेर की व्यवस्था बैठक सम्पन्न

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। होलिका दहन के 5 दिन बाद रंगपंचमी का पर्व पूरे नगर में उत्साह के साथ मनाया जाता है इस बार भी यह आयोजन 30 मार्च शनिवार को मंदसौर शहर में मनाया जा रहा है। हर बार की तरह इस बार भी रंगपंचमी पर महागैर श्री बालाजी मंदिर बस स्टैंड से प्रारंभ होकर भारत माता चौराहा, बसंत दाल बाटी के पास से होटल नीलम रोड, कालाखेत रोड नं. 3, पोस्ट ऑफिस रोड, सदर बाजार, मंडी गेट, वीर सावरकर ब्रिज, धानमंडी, बड़ा चौक, गणपति चौक, अशोक टॉकीज, वरुण देव मंदिर शुक्ला चौक होते हुए घंटाघर पर समापन होगा।

आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सोमानी, सचिव अमरजीत सिंह चावला टीटू वीर जी, हेमंत बुलचंदानी आदि ने बताया कि इस हेतु समाज प्रमुखों की बैठक में लिए गए निर्णय अनुसार विभिन्न समितियां का गठन किया गया है। जिसमें श्री बड़े बालाजी मंदिर, पुराना बस स्टेण्ड पर महाआरती व्यवस्था हेतु समिति बनाई गई जिसके प्रभारी प्रद्युमन शर्मा, फुंदासिंह सिसौदिया, करण परिहार, सुरेश राठौर, ब्रजेश मारोठिया को बनाया। स्वल्पाहार व्यवस्था समिति के प्रभारी कन्हैयालाल सोनगरा, जगदीश सेठिया, हेमंत बूलचंदानी, बाबूलाल राठौर, मनोज बागडिया, हरिश अगवाल बनाये गये। अनुशासन समिति प्रभारी अरूण शर्मा, रविन्द्र पाण्डे, रमेश ग्वाला, मनोज सांखला, राजू अखेरिया बनाये गये। प्रचार प्रसार समिति के प्रभारी नरेन्द्र अग्रवाल, प्रहलाद शर्मा पिंटू, मुकेश आर्य, शंभुसेन राठौर, उमेश नेक्स, सुरेश भावसार, जितेन्द्र गेहलोत, प्रहलाद पंवार, हेमंत बुलचंदानी, विकास भण्डारी, रमेशचन्द्र चन्द्रे, रमेश खत्री बनाये गये। ढोल, डीजे एवं साउंड व्यवस्था समिति प्रभारी सरदार अमरजीतसिंह चावला, अशोक मारू, शरद धींग, वासुदेव सेवानी, नरेश परमार तथा स्वच्छता समिति प्रभारी मनोहर चौहान, विजय कोठारी, नटवर वर्मा, ललित पटेल, अजय शर्मा, सत्येन्द्रसिंह सोम, जल व्यवस्था समिति प्रभारी राजकुमार राठौर, शिवसिंह राणा, अजय श्रीवास्तव, सुरेन्द्रसिंह चौहान, जितेश पण्ड्या, न.पा. फायर फाइटर एवं गुलाल उडाने वाली मशीन व्यवस्था समिति प्रभारी हिम्मत लोढा, राजकुमार राठौर, योगेश पटेल, दिलीप सेठिया, मुकेश खमेसरा, सुरक्षा व्यवस्था समिति प्रभारी अशोक सोनी, नंदकिशोर परमार, गोपाल दिवान, सोहनसिंह राजपाल, जसविन्दरसिंह आनंद, आनंद तंवर, समाज सम्पर्क समिति प्रभारी कन्हैयालाल कुमावत, दशरथ कुमावत, श्रवण रजवानिया, बंकटमहेश सोमानी, महेश अग्रवाल, रूपलाल खटीक, गुलाल व्यवस्था समिति चन्द्रप्रकाश शर्मा व हिम्मत डांगी बनाये गये।

भगवान राम ने पाप के प्रतिक रावण का किया वध

भगवान राम व सीता माता का हुआ राज्याभिषेक, रावण वध के साथ ही रामलीला का हुआ विश्राम

मनासा, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। समीपस्थ गांव नलखेडा में श्री शिव शक्ति रामलीला मंडल नलखेडा के युवा कलाकारों द्वारा हाथरस की तर्ज पर आधारित 14 दिवसीय रामलीला का मंचन किया गया। युवा कलाकारों द्वारा प्रतिदिन रात 8 बजे से 11 बजे तक गांव के श्रीचारभुजा नाथ मंदिर परिसर पर संगीतमय रामलीला का आयोजन किया गया। इसमें रामलीला के 14 वें दिन कलाकारों द्वारा रावण वध व राम राज्याभिषेक प्रसंग का सजीव चरित्र चित्रण किया गया।

जब रावण के सभी योद्धा युद्ध में मारे जाते हैं तो रावण स्वंय राम से युद्ध करने युद्ध भूमि में जाने की तैयारी करता हैं। इस बीच रावण की पत्नि मंदोदरी बार-बार समझाते हुए रावण से कहती है कि है स्वामी युद्ध में लंका के सारे योद्धा मारे गए, आज लंका एक शमशान की तरह नजर आ रही है, चारों तरफ चिताएं जल रही हैं। लंका के चारों तरफ से विधवा महिलाओं व बच्चों के रोने के ही आवाज सुनाई दे रही है। तो है स्वामी अब भी समय है आप सीता को राम को सोप लंका का संपूर्ण विनाश होने से बचा लिजिए। लेकिन हठधर्मी रावण मंदोदरी को धक्का मारते हुए युद्ध में पहुंचता हैं। इधर भगवान राम को नंगे पैर देख इन्द्र उनके लिए रथ भेजता है। जिस पर सवार होकर भगवान युद्ध भूमि में पहुंचते हैं। जब बार-बार भयंकर अस्त्र-शस्त्रों से भी रावण नहीं मरता है तो विभिषण उनके रावण की नाभी जहां अमृत कुंभ है वहां बाण लगाने की बात करता हैं। तब भगवान ने रावण की नाभी में बाण लगाकर उसका वध कर अपने श्री चरणों में स्थान दिया। रावण के मारे जाने के बाद मंदोदरी सहित अन्य रानियां विलाप करती हैं। रावण का वध करने के बाद भगवान माता सीता सहित सभी राजाओं को अपने साथ लेकर अयोध्या पहुंचते हैं। जहां सभी गुरूजनों, माताओं एवं परिजनों से मिलते हैं। अयोध्या में भगवान राम व माता सीता के 14 वर्ष वनवास के बाद अपने व राम राज्याभिषेक की खुशी में आतिशबाजी की जाती हैं। साथ ही एक दुसरे को बधाई देते हुए खुशियां बांटी जाती हैं। रावण वध व राम दरबार का कलाकारों ने रामलीला के मंच से सजीव चरित्र किया। इसमें रावण की भूमिका विजय शर्मा, राम राहुल पाटीदार, मंदोदरी प्रदीप लोहार, लक्ष्मण भरत कारपेंटर, विभिषण कमलेश राठोर, सीता ललीत पाटीदार, उर्मिला विनोद शर्मा, हनुमान अर्जुन शर्मा, सुग्रीव पंकज मोड, भरत लवकुश राठोर, शत्रुघ्न राहुल धनगर, गुरू वशिष्ठ चन्द्र प्रकाश मोदी, नल आदित्य सेन, मंत्री भरत कनेरिया, मुकेश जैन, लंकेश शर्मा, कवि सेवा निवृत्त पोस्ट मास्टर जगदीशचंद्र शर्मा, पंडित मदनलाल शर्मा, मेकअप प्रकाश सेन ने निभाई। इस दोरान क्षेत्र के पुर्व जनपद सदस्य नंदकिशोर पोरवाल द्वारा रामलीला मंडल के समस्त कलाकारों का उपहार भेंट कर सम्मान किया गया। अतिथि सेवा निवृत्त प्रबंधक रामकिशन पाटीदार, सेवा निवृत्त सैनिक भरत शर्मा सहित बडी संख्या में महिला पुरुष उपस्थित थे। राम राज्याभिषेक के साथ ही नलखेडा में चल रही 14 दिवसीय रामलीला का विश्राम हुआ।

सिद्धि विनायक गणपति उत्सव समिति द्वारा 31 को विशाल भंडारे का आयोजन

बजट बैठक हुई संपन्न, भंडारे हेतु जिम्मेदारियां सौंपी

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। श्री सिद्धिविनायक गणपति उत्सव समिति नई आबादी द्वारा प्रति वर्ष अनुसार इस वर्ष भी 31 मार्च रविवार को विशाल भंडारे का आयोजन रखा गया है। विषय सम्बन्धित जानकारी देते हुए श्री सिद्धिविनायक गणपति उत्सव समिति के अध्यक्ष पुरुषोत्तम चंदवानी एवं सचिव पारस मावर ने गत वर्ष हुवे आयोजन को लेकर बजट बैठक में जानकारी देते हुए कहा कि 31 मार्च को प्रात: 10:00 बजे हवन पूजन और महा आरती कर प्रात: 10:30 से भक्त जनों के लिए विशाल भंडारे का आयोजन प्रारंभ होगा। संपन्न हुई बजट बैठक में भक्त के रूप में सम्मिलित हुए राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर ने अपने सुझाव देते हुए कहा कि श्री सिद्धिविनायक गणपति उत्सव समिति लगातार नवी बार इस प्रकार के भव्य भंडारे का आयोजन कर रही है और साथ ही विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्यों में भी यह समिति बढ चढकर सहभागिता करती है। मैं समिति के इस कार्य की प्रशंसा करते हुए समिति के सदस्यों से आग्रह करूंगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भक्त जनों के लिए समुचित व्यवस्था जुटाकर भंडारे का सफल आयोजन करें। इस अवसर पर समिति के संरक्षक त्रिलोक सिंह नारंग, राजेंद्र अग्रवाल, दिलीप मेहता सहित राजू चावला एवं अजय सिंह चौहान ने भी अपने सुझाव बजट बैठक में भक्त जनों के सामने रखें। बैठक में समिति के कोषाध्यक्ष योगेश याग्निक ने आठवें भंडारे एवं अन्नकूट के आय व्यय का पत्रक पेश किया। बजट बैठक में समिति के सदस्य गण विवेक माथुर, रमेश गंगवानी, शैलेंद्र सिंह राठौड, जगदीश सेठिया, सुरेश बाबानी, रमेश सिंह राठौड, कन्हैयालाल टांक, कोमल पारलिया, निलेश गुप्ता, संदीप सुरा, बंटी गोविंद चाय, रमेश जायसवाल, अंबालाल टॉक, दीपक सेठिया, अरुण भावसार, आकाश निगम, राजेंद्र सिंह चंद्रावत, कन्हैयालाल देशमुख, संतोष असवानी, विष्णु खींची, नारायण पोरवाल, मुकेश माली, कन्हैयालाल सोनगरा, मयंक मावर, सहित बडी संख्या में मातृशक्ति उपस्थित थी। बैठक में आभार संरक्षक दिनेश सेठिया ने माना। उक्त जानकारी आयोजन समिति के सदस्य निलेश जैन ने दी।

लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए जगह-जगह मतदाता जागरूकता के नारे लिखे

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। स्वीप गतिविधियों के अंतर्गत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशन में जिले में लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए जगह जगह दिवार पर नारे लिखे जा रहे है, एवं मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। साथ ही गावं वालों को मतदान के बारे में जानकारी भी दी ज रही है। मतदाताओं को मतदान की शपथ दिलाई गयी। शपथ लेते हुए सभी ने कहा कि, 'मैं भारत की/का नागरिक लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेती/लेता हूं कि मैं, अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखूंगी/रखूंगा तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना मध्यप्रदेश लोकसभा निर्वाचन 2024 में अपने मताधिकार का प्रयोग करूंगी/करूंगा। शपथ की साथ ही ऐसे युवा मतदाता जिनकी उम्र 18 वर्ष पूर्ण हो चुकी है तथा उनका नाम मतदाता सूची में नहीं जुड़ा है। ऐसे युवा मतदाता से अपील की गई कि वह फार्म 6 भर कर अपना नाम मतदाता सूची में जुडवाए।

कलेक्टर का फेसबुक लाईव, मतदाताओं से करेगें सीधा संवाद आज

नीमच, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एंव जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिनेश जैन आज 28 मार्च 2024 गुरूवार को अपरान्हु 4 बजे से कलेक्टवर कार्यालय नीमच के फेसबुक पेज https://www.facebook.com/dmneemuch पर लाईव होकर, जिले के मतदाताओं से सीधा संवाद करेगें। फेसबुक लाईव के माध्य0म से कलेक्ट,र एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री जैन भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा मतदाताओं की सुविधा के लिए किये जा रहे, प्रयासों के विषय में जानकारी देगें। लोकसभा निर्वाचन तैयारियों के सन्द र्भ में चर्चा करेगें। साथ ही जिले में लोकसभा निर्वाचन-2024 की निर्वाचन प्रक्रिया संबंधी प्रश्नों के जवाब भी देगें। प्रश्न पूछने के लिए लाईव के दौरान कलेक्ट2र नीमच के फेस बुक पेज https://www.facebook.com/dmneemuch के कमेंट बॉक्सीं में जाकर अपने प्रश्ना लिख सकते है।

घर-घर मतदान के संबंध में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की बैठक सम्पन्न

नीमच, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अंतर्गत भारत निर्वाचन आयोग व्दालरा दिव्यां गों एवं वरिष्ठ नागरिकों को घर से मतदान की सुविधा उपलब्धन कराने के संबंध में आयोग के नवीनतम निर्देशों से अवगत कराने के संबंध में आज 28 मार्च 2024 को प्रात: 10.30 बजे कलेक्टो रेट कार्यालय सभाकक्ष में एक बैठक का आयोजन किया गया है। उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री संजीव साहू ने मान्यधता प्राप्त राजनैतिक दलों के जिले के अध्ययक्षों व सचिवों से इस बैठक में उपस्थित रहने का आगृह किया है।

मेहंदी प्रतियोगिता के माध्यम से किया जा रहा मतदाताओं को जागरूक

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अंतर्गत स्वीप गतिविधियों के तहत जिले में मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसके लिये महिला एवं बाल विकास विभाग के तत्वाधान में मतदाता जागरूकता के कार्यक्रम लगातार आयोजित किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत गांव- गांव में मतदाताओं को जागरूक करने के लिए मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है तथा महिलाएं हाथों में मेहंदी लगाकर मतदाताओं को जागरूक कर रही हैं। संदेश के रूप में हम सब वोट करेंगे, वोट देंगे। इस प्रकार के संदेश भी लिख रही है। यह कार्य महिला बाल विकास विभाग के माध्यम से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं के द्वारा किया जा रहा है। इस कार्य में मतदाताओं के द्वारा भी विशेष रूचि ली जा रही है। साथ ही सभी लोग आपस में जागृत हो रही रहे हैं, और अन्य लोगों को भी जागरूक कर रहे हैं।

प्रतिभावान का छात्र-छात्राओं का सम्मान किया

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। एक गरिमामय समारोह में हायर सेकेंडरी बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए समाज का नाम बढ़ाने वाले प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया एवं उनके भविष्य उज्ज्वल भविष्य की कामनाएं की गई होली के अवसर पर सोमवार की रात 9.00 बजे नीमा समाज की वार्षिक बैठक पर नीमा पंचायत भवन में संपन्न हुई जहां उक्त आयोजन हुआ बैठक की अध्यक्षता समाज के अध्यक्ष राजेंद्र नीमा (राजू) ने की जिसमें उपाध्यक्ष पंकज नीमा कोषाध्यक्ष रामेश्वर नीमा सह कोषाध्यक्ष कृष्णकांत नीमा संरक्षण कैलाश नीमा एवं कैलाश साकी तथा वरिष्ठ जन सोहनलाल कंठाली सत्यनारायण जी चंचावत प्रकाश चंद्र नीमा गोविंद नीमा तथा कार्यकारिणी के सदस्य महिलाएं एवं युवाएं की टोली उपस्थित थे संचालन करते हुए सचिव संजय नीमा वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया विभिन्न गतिविधियों एवं भावी कार्य योजनाओं पर भी विस्तार से प्रकाश डाला बैठक में पिछले वर्ष के दौरान दिवंगत समाज जनों को प्रति श्रद्धाजली अर्पित की गई

इनका हुआ सम्मान-गत वर्ष हायर सेकेंडरी बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर समाज का नाम बढाने वाले प्रतिभावान छात्र-छात्राओं पर्व दिनेश जी कंठाली वंश मनीष जी डोसी ऋषिका (लकी) संजय नीमा तथा लक्ष्य मनीष नीमा का अध्यक्ष एव उपाध्यक्ष के हाथों पुरस्कृत करते हुए प्रशस्तिपत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट की गई इस अवसर पर आयोजन स्थल पर करतल धवनी से गूंज उठा बैठक में कई वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सुझाव भी दिए सोहद्रपूर्ण परिवेश में बैठक देर रात तक चली बाद में समाजजनों को प्रसादी वितरित की गई अंत में समाज के अध्यक्ष श्री नीमा ने आभार प्रदर्शन किया।

ऑल इंडिया मीडिया एसोसिएशन मंदसौर के जिलाध्यक्ष पद पर मारू निर्वाचित

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। भारत के सबसे बढे पत्रकार संगठन ऑल इंडिया मीडिया एसोसिएशन के ई-वोटिंग प्रक्रिया से पुरे देश के लगभग 215 जिलों के चुनाव सम्पन्न हूए जिसके परिणाम 27 मार्च 2024 को घोषित हुए। संगठन के संविधान के अनुसार लोकतंत्र को निष्पक्ष एवं पारदर्शी प्रक्रिया के तहत चुनाव मे मंदसौर जिलाध्यक्ष पद पर राधेश्याम मारू अपने प्रतिद्वंदी से 35 वोट अधिक लाकर विजय रहे। ऑल इंडिया मीडिया एसोसिएशन की और से जारी प्रेस विज्ञप्ती मे बताया गया की मध्यप्रदेश राज्य के मंदसौर जिलाध्यक्ष चुनाव मे कुल 216 सदस्यों मे से 143 सदस्यो ने ई-वोटिंग मे भाग लेकर चुनाव मे अपना वोट दिया। मंदसौर जिलाध्यक्ष पद के लिए तीन उम्मीदवार मे राधेश्याम मारू को कल वोट 86, द्वितीय को 51 वोट, तृतीय को 6 वोट प्राप्त हुए। मंदसौर के राधेश्याम मारू अपने प्रतिद्वंदी से 35 वोट अधिक लाकर ऑल इंडिया मीडिया एसोसिएशन जिलाध्यक्ष मंदसौर के पद निर्वाचित होकर विजय रहे।

शादी की बात पर बेटों ने पिता को पीटा, प्रकरण दर्ज

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मल्हारगढ़ थाना क्षेत्र के गांव मुंडली में शादी नहीं कराने की बात पर 2 बेटों ने अपने पिता को ही पीट दिया। पिता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी पुत्रों पर केस दर्ज किया।

मल्हारगढ़ पुलिस के अनुसार ग्राम मुंडली निवासी अंबालाल पिता राधेश्याम बावरी उम्र 42 साल ने रिपोर्ट दर्ज करवाई कि उसके पुत्र मनीष पिता अंबालाल व दिलीप पिता अंबालाल ने शादी नहीं करवाने की बात को लेकर विवाद किया। समझाने के बाद भी उन्होंने मारपीट की व जान से मारने की धमकी दी। मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

शहर ब्लॉक कांग्रेस की बैठक सम्पन्न

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मन्दसौर नीमच जावरा संसदीय क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी दिलीपसिंह गुर्जर के 28 मार्च को मन्दसौर में आयोजित आयोजन को लेकर शहर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के सभी मंडलम एवं सेक्टर अध्यक्षों के साथ बैठक कर कार्य विभाजन किया गया एवं सभी को जिम्मेदारियां सौंपी गई। बैठक को सम्बोधित करते हुए शहर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष डॉ राघवेंद्रसिंह तोमर ने सभी कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों से सक्रियता से कार्य में जुट जाने का आह्वान किया। मंडलम अध्यक्षगण राजनरायण लाड, शुभम कुमावत, विजय जैन, वकार खान, दशरथसिंह राठौर, अजय सोनी, रमेश बृजवानी सहित बडी संख्या में पदाधिकारीगण शामिल हुए। बैठक के बाद कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण भी किया गया।

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	42	2236	2415
उडद	1	4500	4500
सोयाबीन	3554	3260	4600
गैहु	6800	----	----
चना	787	4900	5420
मसुर	184	5200	5900
धनिया	125	5000	7600
लहसुन	25200	3750	13500
मैथी	1400	4401	5800
अलसी	1530	4621	5029
सरसो	360	4300	4900
तारामीरा	1	4450	4450
इसबगोल	70	10000	14821
प्याज	261	400	1539
कलोंजी	29	16200	18551
डॉलर	75	4599	10401
तिल्ली	0000	0000	0000
मटरसुखी	1	3450	3450
असालीया	73	6666	6919

स्व. श्यामसुंदर पाटीदार का पुण्य स्मरण....

लोकसभा चुनाव में छठी बार कांग्रेस परचम लहराएगी ?

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। इक्कतीस मार्च गांधीवादी नेता एवं पूर्व श्रममंत्री श्री श्यामसुंदर पाटीदार की पुण्यतिथि है, वे छ: बार कांग्रेस से विधानसभा चुनाव जीते और दो बार मंत्री पद पर रहे। गरीबों, किसानों, श्रमिकों के हित में कई कार्य किए मंदसौर को विकास के मार्ग पर ले जाने की नींव रखी। लोकसभा चुनाव की घोषणा हो चुकी है। कांग्रेस कार्यकर्ता एवं आम नागरिक चर्चारत हैं कि छठी बार कांग्रेस लोकसभा चुनाव में परचम लहराएगी? 17 में 5 चुनाव कांग्रेस जीत पाई। भाजपा के बाद कांग्रेस ने भी अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया है। दो बार के भाजपा के सांसद सुधीर गुप्ता के सामने कांग्रेस ने चार बार के विधायक रहे दिलीपसिंह गुर्जर को अपना उम्मीदवार घोषित किया है। इस चुनाव में गुप्ता एवं गुर्जर के बीच सीधा मुकाबला है। गत वर्ष दिसम्बर में हुए विधानसभा चुनाव में मंदसौर संसदीय क्षेत्र की सात सीटों पर भाजपा जीती थी इनके उम्मीदवारों को लगभग पौने दो लाख मतों की बढत मिली थी। मल्हारगढ के कांग्रेस के बागी निर्दलीय उम्मीदवार श्यामलाल जोकचंद को 50 हजार से अधिक वोट मिले थे। राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि भाजपा और कांग्रेस के बीच सवा लाख मतों का मुकाबला है। चुनावी मैदान में भाजपा के पक्ष में उपमुख्यमंत्री जगदीश देवडा, राज्यसभा संसद बंशीलाल गुर्जर का दरोमदार रहेगा तो कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, संसदीय क्षेत्र के पूर्व मंत्रियों, पूर्व विधायकों के भरोसे रहेगी। देश में चल रहा दलबदल का खेल मंदसौर लोकसभा सीट तक पहुंच गया। चार बार के विधानसभा के कांग्रेस के पराजित उम्मीदवार उमरावसिंह गुर्जर ने भाजपा की सदस्यता ले ली तो नीमच जिला कांग्रेस में कार्यकर्ताओं ने मिठाई बांटकर पटाखे छोड गुर्जर की कांग्रेस से विदाई की खुशी मना ली।

इस अंचल में कांग्रेस कमजोर होती गई इसकी चिंता, समीक्षा नहीं हो सकी। तिकडम, जुगाडू उम्मीदवारों को जनता ने हरा दिया। जिताऊ उम्मीदवार तलाशने की कोशिश नहीं होने के दुष्परिणाम सामने हैं। कोई सबक सीखने के लिये दिल्ली, भोपाली नेता तैयार नहीं हैं। गांधीवादी नेता श्री श्यामसुंदर पाटीदार के साथी प्रखर समाजसेवी एस.एन. सुब्बारावजी, व्यंकटेश, विष्णु द्रविड, तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री द्वारकाप्रसाद मिश्रा, अर्जुनसिंह, दिग्विजयसिंह रहे। श्री पाटीदार जी की टीम में भी 200 से अधिक विश्वसनीय, प्रामाणिक व्यक्ति सम्मिलित रहे। इस कारण से छ: बार विधानसभा चुनाव जीत पाए।

आज जब नेताओं की विश्वसनीयता में गिरावट आ रही है। ऐसे माहौल में श्री पाटीदारजी का स्मरण सुकून देता है उनके मन हमेशा दूसरों की भलाई की बात रहती थी। उनके दरवाजे सदैव शोषित पीड़ितों की भलाई के लिये खुल रहते थे। सत्ता के आडम्बर से वे सदैव दूर रहे। आज की राजनीति में उन जैसा व्यक्ति आसानी से नहीं मिलता। वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे। क्या आज के नेता इन शब्दों से सबक लेंगे या धन की जुगत में ही चलते रहेंगे ? एक-एक बार लोकसभा या विधानसभा चुनाव जीतना कोई बडे नेता बनने की निशानी नहीं होती। बडे नेता 12-12 चुनाव जीते हैं। बिना जीते कौन नेता मानेगा ? जुगाड कर टिकट लाना नेता बनने की निशानी नहीं है।

विक्रम विद्यार्थी, मंदसौर

रंग गया किधर

गैरों पर रंगों की
बरसात होती रही
आंखें अपनों का
रंग खोजती रही।
ऐ जिंदगी मेरा
तुझे यही गिला
कहीं अपनेपन
का रंग नहीं मिला।
इनकार नहीं तू
इकरार तो कर
मेरे नसीब का
रंग गया किधर।

नंदकिशोर राठौर, मंदसौर

बदल गया है बांके बिहारी जी के दर्शनों का समय

मथुरा, 27 मार्च। बांके बिहारी के भक्तों के लिए खास खबर है। खबर बांके बिहारी जी के दर्शनों को लेकर है। आज से दर्शनों के लिए मंदिर के कपाट खुलने का समय बदल गया है। आज से कपाट 7.45 बजे खुल रहे हैं और बंद करने का समय दोपहर 12 बजे है। शाम को मंदिर को मंदिर के पट 5.30 बजे दर्शन के लिए खोले जाएंगे और रात को 9.30 बजे शयनभोग आरती के बाद बंद कर दिए जाएंगे। आज से बदले हुए समय के अनुसार मंदिर के पट सुबह एक घंटे पहले खुलेंगे दर्शन और शाम को एक घंटे देर से बंद किए जाएंगे। मंदिर का यह बदला समय दीपावली तक यही रहेगा। इससे पहले अब तक मंदिर के कपाट सुबह 8.45 बजे खुलते थे। दोपहर 1 बजे उन्हें बंद कर दिया जाता था। इसके बाद शाम को 4.0 बजे फिर से मंदिर के द्वार भक्तों के लिए खोले जाते थे जो रात को 8.30 बजे तक खुले रहते थे। अब कल से मंदिर में ग्रीष्मकालीन दर्शन के लिए समय सारणी को लागू किया जाएगा।

युवा कांग्रेस नेता सोमिल नाहटा राजगढ़ जिले के सह प्रभारी बने

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। आगामी लोकसभा चुनाव हेतु प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जितु पटवारी के निर्देष पर मंदसौर संसदीय क्षेत्र के युवा कांग्रेस नेता एवं युवा कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष सोमिल नाहटा को राजगढ जिले का सह प्रभारी नियुक्त किया गया।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने 27 मार्च को जारी एक पत्र में सोमिल नाहटा की नियुक्ति राजगढ जिले के सह प्रभारी के रूप में की है। श्री नाहटा की इस नियुक्ति पर उनके इष्टमित्रां एवं शुभचिंतकों ने उज्जवल भविष्य की कामना की है। नियुक्ति पर सोमिल नाहटा ने कहा कि पार्टी ने जो आदेश दिया है उसका पालन किया जायेगा और आगामी लोकसभा चुनाव में परिणाम कांग्रेस के पक्ष में आयें इसे लेकर परिश्रम किया जायेगा।

हर वर्ग के विकास के लिए प्रतिबद्ध है मोदी सरकार-सुधीर गुप्ता

बूढ़ा, पिपलियामंडी और मल्हारगढ़ मंडल के सामूहिक पिछड़ा मोर्चा सम्मेलन संपन्न

मंदसौर/नीमच, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मिंदसौर लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी एवं सांसद सुधीर गुप्ता ने मल्हारगढ विधानसभा के बूढा, पिपलियामंडी और मल्हारगढ मंडल के सामूहिक पिछड़ा मोर्चा सम्मेलन में सहभागिता कर उपस्थित जनों को संबोधित किया। सुधीर गुप्ता ने कहा कि मोदी सरकार ने हर वर्ग के लिए विकास कार्य किया है। कई योजनाएं ऐसी है जिसका लाभ हर वर्ग व हर क्षेत्र के नागरिकों को मिला है। पीएम विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्जवला योजना, गरीब अन्न कल्याण योजना जैसी अनेक योजना है जिससे देश का हर वर्ग लाभान्वित हो रहा है। राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर ने कहा कि अंतिम पंक्ति पर बैठे व्यक्ति का विकास करना ही भाजपा का संकल्प है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में ना सिर्फ देश में विकास कार्य हुए बल्कि देश ने कई उपलब्धियों को छुआ है। हमें इन्ही उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाना है। 400 पार एक संकल्प ही नही बल्कि आने वाले सालों में विकसित भारत की नीच भी रखेगा। इसी के साथ ही बैठक में सभी को अपने अपने दायित्वों के प्रति पूर्ण रूप से निर्वहन करने की बात भी कहीं।

कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर, वरिष्ठ नेता मानसिंह माच्छोपुरिया, पिछड़ा मोर्चा प्रदेश मंत्री श्री धीरज पाटीदार, जिला महामंत्री राजेश दीक्षित, पिछड़ा मोर्चा जिलाध्यक्ष रणजीतसिंह, मंडल अध्यक्षगण सामंतसिंह, राजेंद्रसिंह राणा, जितेंद्र जाट, नपा अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा देवरिया, पिछड़ा मोर्चा महामंत्री सुमित सेन सहित पार्टी के अन्य पदाधिकारी एवं सर्व समाज के वरिष्ठजन उपस्थित थे।

जिला पंचायत सीईओ ने ली विभागीय समीक्षा बैठक

11 सेक्टर सुपरवाईजरों को कारण बताओं नोटिस जारी

नीमच, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। जिला पंचायत सीईओ श्री गुरूप्रसाद की अध्यतक्षता में बुधवार को जिला पंचायत सभाकक्ष में महिला एवं बाल विकास परियोजना अधिकारी व पर्यवेक्षकों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभागीय गतिविधियों की अपेक्षित प्रगति नहीं पाये जाने पर परियोजना अधिकारी श्री फखरूद्दीन बोहरा जावद एवं पर्यवेक्षक श्रीमती रेखा जोहरिया नयागांव, श्रीमती सरिता चौहान जावद, श्रीमती सुनीता मोड अठाना, श्रीमती उमा शर्मा नीमच ग्रामीण, श्रीमती जहांआरा जाट, श्रीमती दीपिका नामदेव जीरन, सुश्री रानी आर्य लोडकिया, श्रीमती गिरजा शर्मा रेवली देवली, श्रीमती रेखा गौड झांतला, श्रीमती शबाना बी ताल को कारण बताओ सूचना पत्र जारी किये गये तथा कारण बताओ सूचना पत्र का उत्तर समाधानकारक नही होने पर दो वेतनवृद्धि रोकने के निर्देश दिए गए है। बैठक में अनुपस्थित पर्यवेक्षक श्रीमती श्वेहता जैन सेक्टर मोरवन एवं श्रीमती जानी मेघवाल सेक्टर सिंगोली एक दिन का अवैतनिक करने के निर्देश दिये गयें।

भाजपा समर्पित सरपचों की बैठक आज

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री बंसत शर्मा ने प्रेस वक्तव्य में बताया की दिनाक 28.03.2024 गुरूवार को आगामी लोकसभा चुनाव के मदेनजर भा.ज.पा. के जिलाध्यक्ष श्री नानालाल जी अटोलिया की अध्यक्षता में भा.ज.पा. कार्यालय पर जनपद मंदसौर में निवासरत भारतीय जनता पार्टी समर्पित सरंपचों की विशेष बैठक दोपहर 2 बजे रखी गयी है। इस बैठक में भा.ज.पा के सांसद श्री सुधीर गुप्ता एंव पार्टी के वरिष्ठ नेतागण उपस्थित रहैगे।

स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन सम्पन्न कराने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका-श्रीमती गामड़

लोकसभा निर्वाचन 2024 की तैयारियों के संबंध में मीडिया कार्यशाला सम्पन्न

नीमच, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा निर्वाचन 2024 की तैयारियों के संबंध में कलेक्टोरेट सभाकक्ष नीमच में बुधवार 27 मार्च 2024 को जिले के मीडिया एवं प्रेस प्रतिनिधियों की कार्यशाला एडीएम श्रीमती लक्ष्मी गामड की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस मौके पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री संजीव साहू, सहायक संचालक जनसंपर्क श्री जगदीश मालवीय, डिप्टी कलेक्टर सुश्री मयूरी जोक तथा प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए, एडीएम श्रीमती लक्ष्मी गामड ने कहा, कि स्वतंत्र, निष्पक्ष शांतिपूर्ण एवं पारदर्शी निर्वाचन प्रक्रिया सम्पन्न कराने में प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होने कहा, कि मतदाता जागरूकता अभियान में प्रेस जगत सहयोग करें और लोकसभा निर्वाचन में मतदान का प्रतिशत बढाने तथा मतदाताओं को मतदान केंद्र पहुंचकर, मतदान करने हेतु प्रेरित करें। नेशनल लेवल मास्टर ट्रेनर डॉ.राजेश पाटीदार ने इस कार्यशाला में आयोग के निर्देशों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होने प्रिंट एवं इलेक्ट्रा निक मीडिया में राजनैतिक विज्ञापनों की निगरानी, विज्ञापनों का पूर्व प्रमाणिकरण, संदिग्ध पेडन्यूज, मीडिया मॉनिटरिंग एवं प्रमाणन समिति का गठन, समिति के कार्य, विज्ञापनों के पूर्व प्रमाणिकरण एवं विज्ञापन प्रकाशन के संबंध में ध्यान देने योग्य मुख्य बिंदु, पेड न्यूज की परिभाषा एवं पेड न्यूज की पहचान, पेड न्यूज परखने के मापदण्ड, पेडन्यूज मॉनिटरिंग एवं रिर्पोटिंग, फेक न्यूज, फेक न्यूज पर की जाने वाली कार्यवाही, ओपिनियन पोल एवं एक्जिट पोल के संबंध में आयोग के निर्देश, निर्वाचन के दौरान पालन करने संबंधी दिशा निर्देश, एनबीएसए व्दारा इलेक्ट्रानिक मीडिया के लिए जारी दिशा निर्देशों की विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि आयोग व्दारा समस्त मीडिया फोरम से स्वैच्छिक अनुपालन की अपेक्षा की गई है। स्व –विनियमन पेड न्यूज मामले पर अंकुश लगाने का सर्वोत्तम विकल्प है। कार्यशाला में प्रेस एवं मीडिया प्रतिनिधियों के प्रश्नो एवं जिज्ञासाओं का समाधान भी किया गया।

महाविद्यालय की चार छात्राओं को स्वर्ण पदक

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा वर्ष 2023 के परीक्षा परिणामों में शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर ने उल्लेखनीय सफलता दर्ज की है। महाविद्यालय की चार छात्राओं ने कडी मेहनत और परिश्रम से स्वर्ण पदक प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। छात्राओं की इस सफलता पर महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष श्री नरेश चंदवानी ने बधाई शुभकामनाएं देते हुए छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की है। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा घोषित परीक्षा परिणाम में सुश्री भावना रायकवार ने संस्कृत में प्रथम स्थान, सुश्री दया पाटीदार ने एमए दर्शन शास्त्र में प्रथम स्थान, सुश्री दीपाली जैन ने एमएससी गणित में प्रथम स्थान एवं सुश्री सुषमा सिंह यादव ने एमएससी कंप्यूटर विज्ञान में प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। चारों छात्राओं को विश्वविद्यालय द्वारा स्वर्ण पदक से सम्मानित किया जाएगा। महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति अध्यक्ष श्री चंदवानी ने कहा कि छात्राओं ने इस सफलता को दर्ज कर महाविद्यालय के साथ ही अपने परिवार और शहर का नाम रोशन किया है। यह सफलता अन्य विद्यार्थियों को भी प्रेरित करेगी। मै समूचे महाविधालय परिवार की ओर से छात्राओं को बधाई शुभकामनाएं प्रदान करता हूं।

मतदाताओं को जागरूक करने के लिए दिलाई जा रही शपथ

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। जिले में मतदाताओं को जागरूक करने के लिए शपथ दिलाई जा रही हैं। ''हम, भारत के नागरिक, लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतान्त्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे ।तरह तरह की गतिविधियों के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। यह गतिविधि हाट बाजार, मेलो, चौराहों पर की जा रही है। साथ मतदान केंद्रों पर जाकर ईवीएम को चलाना, मतदान का महत्व, लोकतंत्र का महत्व आदि के बारे में मतदाताओं को बताया जा रहा है। जिससे मतदाताओं में जागरूकता उत्पन्न हो।

तख्तियों के माध्यम से मतदाताओं को किया जा रहा हैं जागरूक

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दिलीप कुमार यादव के निर्देशन में जिले में मतदाता जागरूकता की विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित हो रही हैं। जिले में मतदाताओं को तख्तियों के माध्यम से मतदाताओं को मतदान के लिये जागरूक किया जा रहा हैं साथ ही उन्हें दूसरों को मतदान के लिये प्रेरित किया जा रहा हैं। मतदाता जागरूकता की शपथ ''हम, भारत के नागरिक, लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि हम अपने देश की लोकतान्त्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे ।तरह तरह की गतिविधियों के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है।

अग्रवाल समाज द्वारा नवजन्मे बच्चों व नव दम्पत्ति का किया स्वागत

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। अग्रवाल समाज देशी पंचायत मंदसौर द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी होली मिलन समारोह का आयोजन स्थानीय नरसिंहपुरा स्थित महाराजा अग्रसेन मांगलिक भवन परिसर में अध्यक्ष आशीष गुप्ता की गरिमामय उपस्थिति मे हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ । समारोह में नवजन्में बच्चों एवं विवाह बंधन में बंधे नवयुगल दंपत्तियों का कुम-कुम तिलक लगाकर व पुष्पहार पहनाकर स्वागत कर सम्मान किया गया। परिजनों ने अपने नवजन्मे बच्चों को समाज अध्यक्ष को सौंपा, अध्यक्ष ने बच्चों के मस्तक पर कुम-कुम तिलक लगाकर पुष्पहार पहनाकर समाज की और से स्वागत कर सम्मान किया।

प्रारंभ में समाज की ओर से संरक्षक नरेंद्र अग्रवाल, संयोजक नन्दकिशोर अग्रवाल, परामर्शदाता अनिल गुप्ता, समाज चौधरी संतोष गोयल ने अध्यक्ष आशीष गुप्ता को कुमकुम तिलक लगाकर पुष्पमाला पहनाकर अध्यक्ष की आसंदी पर बिठाया और बाद में नवजन्मे बच्चो को परिजनों ने समाज अध्यक्ष को सौपा। अध्यक्ष ने कुमकुम तिलक लगाकर पुष्पमाला पहनाकर समाज की ओर से उनका स्वागत कर सम्मान किया साथ ही विवाह बंधन में बंधे नवयुगल दंपत्तियों का भी स्वागत किया गया । होली मिलन समारोह में संरक्षक नरेंद्र अग्रवाल ने होली पर्व की शुभकामनाऐं देते हुए कहा कि रंगो के इस त्यौहार पर अग्रवाल समाज की भी अपनी परम्परा है उसी परम्परा का निर्वहन करते हुए समाजजन एक साथ सपरिवार एकत्रित होकर ढुंढ का सामुहिक उत्सव भी मनाते है। अध्यक्ष आशीष गुप्ता ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि समाज के प्रत्येक कार्य में वे हमेशा अग्रणी रहे और अपनी सक्रिय भागीदारी निभाते हुए समाज हित में जो भी अच्छे कार्य हो सकें वह करें। इस अवसर पर अनिल अग्रवाल , पुर्व नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती कुसुम गुप्ता व महिला मंडल की ओर से अध्यक्ष श्रीमती भारती अग्रवाल ने भी शुभकामनाएं देते हुए विचार रखे। होली मिलन समारोह का आरंभ पं. शेलेंद्र उपाध्याय, पं. सत्यनारायण ने वैदिक मंत्रोचार एवं ढोल ढमाकों के साथ होली दहन स्थल एवं भगवान श्री नृसिंहजी की पूजा अर्चना एवं महाआरती करवाकर किया। समारोह का संचालन महासचिव ओम अग्रवाल सर ने किया तथा आभार प्रक्ता गोपी अग्रवाल ने माना।

एपिक कार्ड के साथ सेल्फी लेकर मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक कर रहे

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए गांव-गांव में मतदाताओं को जागरूक करने के लिए हर तरह की गतिविधि का प्रयोग किया जा रहा है। इन गतिविधियों में मतदाताओं द्वारा एपिक कार्ड के साथ सेल्?फी ले कर मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक किया जा रहा है। मतदाताओं में मतदान के प्रति गहरी रूचि एवं उत्साह देखा गया। नए मतदाताओं का कहना है कि हम इस बार जरूर मतदान करेंगे तथा देश के लोकतंत्र को मजबूत बनाने में हम अपना अहम योगदान भी देंगे। इसके साथ ही मतदाताओं को किस तरह से मतदान करना है। मतदान करने से क्या फायदा है आदि के संबंध विस्तार से बताया। यह सभी गतिविधियां स्वीप के माध्यम से की जा रही है। स्वीप गतिविधि के द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

ईवीएम वीवीपैट मशीन का प्रदर्शन कर मतदाताओं को दी जानकारी

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मतदान में शत-प्रतिशत लोग मतदान करें। इसके लिये जिले में ईवीएम वीवीपैट मशीन प्रदर्शन का कार्य किया जा रहा है। ईवीएम तथा वीवीपैट मशीन के उपयोग की जानकारी मतदाताओं को दी जा रही है। ईवीएम एवं वीवीपैट मशीन का प्रदर्शन कर मतदाताओ को जागरूक किया जा रहा है। मतदाताओं को ईवीएम वीवीपैट मशीन प्रदर्शन कर बताया जा रहा है कि बैलेट यूनिट मे अपने पसंद के प्रत्याशी के नाम और चुनाव चिन्ह के सामने वाले नीले बटन को दबाना होगा। जिस प्रत्याशी को वोट दिया है उसके नाम चुनाव चिन्ह के सामने वाली लाल लाइट जलेगी। प्रिंटर एक बैलेट पर्ची प्रिंट करेगा जिसमें पसंद के प्रत्याशी के सरल क्रमांक, नाम और चुनाव चिन्ह अंकित होगा। बैलेट पर्ची सात सेकण्ड के लिए दिखेगी उसे बाद कट कर प्रिंटर के ड्राप बाक्स मे गिर जाएगी और एक बीप की आवाज सुनाई देगी। प्रिंट पर्ची को ग्लास मे से देखा जा सकता है। बैलेट पर्ची नही दिखने एवं बीप की आवाज नही आने पर पीठासीन अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है। ईव्हीएम मशीन में बटन दबाकर वीवीपैट मशीन में जिस प्रत्याशी को मत डाला है। स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इससे अब मतदाता इस बात के लिए निश्चित होगा कि मेने जिसके पक्ष में मत दिया है मतदान वही हुआ है। वीवीपैट मशीन के प्रति मतदाताओं का जहां एक ओर शकांओ का समाधान हो रहा है वही दूसरी ओर मतदान के प्रति जागरूकता बढ रही है। ईवीएम तथा वीवीपैट मशीन के उपयोग की जानकारी मतदाताओं को स्वीप के माध्यम से दी जा रही है।

200 करोड़ रुपये का जेट प्लेन लेगी मध्यप्रदेश सरकार, हेलिकाप्टर के लिए भी ईओआई की जारी

भोपाल, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मध्य प्रदेश सरकार दो साल से जेट प्लेन खरीदने के लिए प्रयास कर रही है लेकिन अब तक प्रक्रिया पूरी नहीं हो पा रही है। इसके लिए बजट में 150 करोड़ रुपये का प्रविधान भी रखा था लेकिन कुछ नए प्रविधान के कारण मामला अटक गया। अब पूर्व निविदा की गई है, जिसमें कुछ कंपनियों ने अपने प्रस्ताव दिए हैं, जिन पर निर्णय लिया जाना है। वहीं, हेलिकाप्टर लेने के लिए एक्सप्रेशन आफ इंट्रेस्ट (इओआइ) जारी की गई है। कंपनियों द्वारा आपूर्ति की रूचि दिखाने पर आगामी कार्यवाही की जाएगी।

शिवराज सरकार में जेट प्लेन खरीदने के लिए बजट में 150 करोड़ रुपये का प्रविधान किया गया था। अमेरिका की टेक्स्ट्रान एविएशन कंपनी से बात भी हुई थी और वह 208 करोड़ रुपये में जेट प्लेन देने के लिए तैयार भी हो गई थी, लेकिन विधानसभा चुनाव की आचार संहिता के प्रभावी हो जाने से प्रक्रिया रुक गई थी। मोहन सरकार में नए सिरे से कवायद हुई और पूर्व निविदा जारी की गई। विमानन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि कुछ कंपनियों ने जेट प्लेन देने के प्रस्ताव दिए हैं। इनका परीक्षण कर आगामी कार्यवाही की जाएगी। जेट प्लेन ऐसा लिया जा रहा है जिसमें दो पायलट के अलावा आठ से दस यात्रियों को ले जाने की सुविधा होगी। प्लेन निरंतर एक हजार की बजाए दो हजार नोटीकल माइल उड़ान भरने की क्षमता हो। रात में भी टैकआफ और लैंड कर सके। पांच हजार फीट की हवाई पट्टी पर भी उतर सके। इसी तरह हेलिकाप्टर भी आठ से दस यात्रियों को ले जाने सहित रात में टैकआफ और लैंड कर सके।

31 नए वाहन खरीदने की भी तैयारी, वित्त विभाग ने पुराने वाहनों का मांगी जानकारी- उधर, सरकार मंत्रियों के लिए नए वाहन खरीदने की तैयारी भी कर रही है। लोकसभा चुनाव की आचार संहिता प्रभावी होने के पहले स्टेट गैराज ने इनोवा क्रिस्टा खरीदने के लिए प्रस्ताव दिया था। इसमें 28 वाहन मंत्रियों, दो उप मुख्यमंत्री और एक मुख्यमंत्री के काफिले के लिए लेना प्रस्तावित किया था। वित्त विभाग ने प्रस्ताव पर मौजूदा वाहनों की स्थिति के बारे में जानकारी मांगी है। इसमें पूछा गया है कि अभी जो वाहन हैं, वे कितने किलोमीटर चल चुके हैं और क्यों बदले जाने चाहिए। उल्लेखनीय है कि सरकार ने 2020, 2021 और 2022 में 18 नए वाहन खरीदे थे, जो मंत्रियों को आवंटित हैं। स्टेट गैराज के अधिकारियों का कहना है कि वाहनों का नियमित तौर पर रखरखाव होता है। 45 हजार किलोमीटर चलने पर टायर बदल दिए जाते हैं और प्रति दस हजार किलोमीटर पर सर्विसिंग कराई जाती है। यदि रखरखाव अच्छा हो तो पांच लाख किलोमीटर चलने पर भी कोई परेशानी नहीं आती है।

फिर सात हजार करोड़ रुपये का ऋण ले रही सरकार- उधर, सरकार भारतीय रिजर्व बैंक के माध्यम से एक बार फिर ऋण लेने जा रही है। यह अलग-अलग अवधि के लिए सात हजार करोड रुपये का होगा। प्रदेश के ऊपर 31 मार्च 2023 की स्थित में तीन लाख 31 हजार करोड रुपये का ऋण है, जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में अब तक लिए गए ऋण को मिलाकर लगभग पौने चार लाख करोड रुपये के आसपास पहुंच गया है।

विभाग के सभी सदस्यों ने एक साथ अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में शिरकत कर रचा नया कीर्तिमान

मंदसौर, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर के अंग्रेजी विभाग के सभी प्राध्यापकों द्वारा ज्ञानोदय यूनिवर्सिटी सुवाखेडा नीमच के 'ईमपावरिंग द फ्यूचर फोस्टरिंग सस्टेनेबल ग्रोथ थ्रू इनौवेशन्स' विषय पर आयोजित पहले दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में शिरकत कर शोध पत्रों की प्रभावी प्रस्तुति दी। विभागाध्यक्ष डॉ.वीणा सिंह द्वारा इंडियन ट्रेडिशनल नॉलेज सिस्टम ए मैसेज फॉर स्किल बेस्ड फ्यूचर पर शोध पत्र वाचन कर भारतीय ज्ञान परंपरा में छिपे भविष्य के रहस्य पर प्रकाश डाला गया, प्रो. सचिन शर्मा द्वारा एक्ज़िसटेनषियलिज़म एंड फेमिनिज्म इन अनिता देसाई फायर ओंन द माउंटेन शीर्षक शोध पत्र में अस्तित्ववाद पर प्रस्तुति, प्रो.आभा मेघवाल द्वारा सस्टेनेबल गो्थ थ्रू इनौवेश्नस इन लिट्रेचर में साहित्य एवम नवाचार पर विचार रखे , प्रो.दीप्ति शक्तावत एवं डॉ.द्युति मिश्रा द्वारा कंजर्वेशन ऑफ लोकल लैंग्वेज एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसमे भविष्य के भारत में स्थानीय भाषाओं का महत्व समझाया गया। संगोष्ठी के पश्चात सभी को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। सभी शोध पत्र अंग्रेजी भाषा में पढे गए। महाविद्यालय के जनभागीदारी अध्यक्ष श्री नरेश चंदवानी, प्राचार्य डॉ.एल एन शर्मा एवम स्टाफ काउंसिल द्वारा इसकी सराहना की गई एवं अंग्रेजी विभाग के सभी सदस्यों को बधाई दी।

महिलाओं को दिलाई शतप्रतिशत मतदान की शपथ

नीमच, 27 मार्च गुरु एक्सप्रेस। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर जिला नीमच श्री दिनेश जैन, अपर कलेक्टर श्रीमती लक्ष्मीन गामड एवं नोडल अधिकारी स्वीप श्री गुरुप्रसाद के निर्देशन में नवांकुर संस्था समर्पण फाउंडेशन द्वारा सेक्टर जीरन में संस्था की सेक्टर प्रभारी दीपा चोरडिया द्वारा नगर विकास प्रस्फुटन समिति जीरन की महिलाओं की बैठक आयोजित कर, लोकसभा चुनाव अंतर्गत मतदाता जगरूकता अभियान हेतु मार्गदर्शन दिया। बैठक में महिलाओं को शतप्रतिशत मतदान करने के लिये प्रेरित करने हेतु सभी वार्डो में मतदाता जागरूकता अभियान चलाने के लिये बताया तथा शतप्रतिशत मतदान की शपथ भी दिलाई।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in